विराम चिह्न

विराम चिह्न की परिभाषा

जब बोलते व पढ़ते समय अपनी बात को ठीक से कहने के लिए हम स्थान-स्थान पर रुकते हैं, उस रुकने की प्रक्रिया को व्याकरण की भाषा में विराम कहा जाता है। लिखते समय रोकने के स्थानों की स्पष्टता के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें हम विराम-चिह्न कहते हैं। विराम- चिह्नों के सही प्रयोग से स्पष्टता आती है। यदि इन चिह्नों का सही प्रकार से प्रयोग न किया जाए तो कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

जैसे - कमलेश ने कहा – ''सुधा गाते समय रुको, मत गाओ'' परन्तु कमलेश कहना ये चाहता था (सुधा गाते समय रुको मत, गाओ)।

परिभाषा - 'विराम' शब्द का अर्थ रुकना, जब हम अपने भावों को भाषा के द्वारा व्यक्त करते हैं, तब एक की अभिव्यक्ति के बाद कुछ देर रुकते हैं, यह रुकना विराम कहलाता है और इस विराम को दर्शाने वाले चिह्न विराम चिह्न कहलाते हैं।

विराम चिह्न 1

(1) <u>प्रश्नवाचक चिह्न (?)</u>- प्रश्न वाले वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग करते हैं।

(i) तुम कहाँ जा रहे हो?

(ii) किधर से आ रहे हो?

(iii) क्या ये तुम्हारी घड़ी है?

(2) <u>विस्मायादिबोधक चिह्न(!)</u> - भय, हर्ष, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों के अंत में इसका प्रयोग होता है; जैसे -

(i) वाह! आज तुम हमारे घर आए।

(ii) अरे! आज यहाँ कैसे।

(3) <u>पूर्णविराम (kkn l)</u> - जहाँ वाक्य का अंत (पूर्ण) हो जाता है, वहाँ पूर्ण विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे -

(i) राम खाना खा रहा था।

(ii) सोनिया घर जा रही है।

(iii) वह माला तोड़ता है।

(4) <u>लाघव चिह्न (°)</u> - जहाँ पूरा शब्द न लिखकर संक्षिप्त रुप लिखकर उसके आगे इसका प्रयोग होता है; जैसे -

डा° – डाक्टर

पं° – पंडित

प्रो° – प्रोफेसर

विराम चिह्न 2

(1) <u>अल्प विराम (,)</u> - पढ़ते अथवा बोलते समय थोड़ा रुकने के लिए अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे -

(i) राम, श्याम और गोपाल तीनों साथ निकले।

(ii) चाय में पानी, चीनी, चायपत्ती व दूध डाला जाता है।

(2) <u>अर्धविराम (;)</u> - यह पूर्णविराम व अल्पविराम के बीच का चिह्न है। जब पूर्णविराम से कम तथा अल्पविराम से अधिक रुकना हो तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग इन स्थितियों में किया जाता है; जैसे -

(i) अब खूब परिश्रम करो; बोर्ड की परीक्षा सिर पर आ गई है।

(ii) सूर्योदय हो गया; अंधकार डर के मारे गायब हो गया।

(3) <u>अपूर्णविराम (:)</u> - पढ़ते समय किसी स्थान पर अर्धविराम की अपेक्षा अधिक समय तक रुकना पड़े तो अपूर्णविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे -

(i) नीचे दिए वाक्य पढिए :

(ii) सही विराम - चिह्न का प्रयोग कीजिए :

(iii) निम्नलिखित वाक्यों का सार लिखिए :

(4) <u>आदेश चिह्न (:-)</u> - किसी विषय को क्रम से लिखना हो तो विषय-क्रम व्यक्त करने से पूर्व इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे -

(i) निम्नलिखित के रुप इस प्रकार हैं :-

(ii) विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

विराम चिह्न 3

(1) <u>योजक (–)</u> - इसका प्रयोग सामासिक पदों या पुनरुक्त और युग्म शब्दों के मध्य किया जाता है; जैसे -

(i) दूर - पास

(ii) पाप - पुण्य

(iii) उत्तर- दक्षिण

(iv) देश - विदेश

(2) <u>निर्देशिक चिह्न (—)</u> - इसका प्रयोग उदारहण के लिए, विषय-विभाग संबंधी, प्रत्येक शीर्षक के आगे, वाक्यांशो अथवा पदों के मध्य विचार अथवा भाव को विशिष्ट रुप से व्यक्त करने हेतु, उद्धरण के अंत में, लेखक के नाम के पूर्व और कथोपकथन में नाम के आगे किया जाता है;

जैसे -

(i) तुलसी का कथन है **—** "राम की महिमा अपार है।"

(ii) दिशाएँ चार होती हैं **—** "पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।"

(3) <u>कोष्ठक (( ))</u> - इसका प्रयोग पद (शब्द) का अर्थ बताने हेतु, क्रम-बोध और नाटक या एकांकी में अभिनय के भावों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है; जैसे -

(i) राम (दशरथ के पुत्र) पिता भक्त थे।

(ii) चारों दिशाएँ - (1) उत्तर, (2) दक्षिण, (3) पूर्व, (4) पश्चिम हैं।

(4) <u>काकपद या हंसपद (^)</u> - कौवा तथा हंस के पंजों के निशान चलते हुए भूमि पर पड़ते यह चिह्न भी इसी भांति होता है। इसलिए इसका नाम काकपद पड़ा। लिखते हुए यदि कुछ छूट जाए तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

विराम चिह्न 4

विराम चिह्न इस प्रकार हैं -

(1) <u>अवतरण या उद्धरण चिह्न (" ")</u> - जब किसी अन्य की उक्ति को बिना किसी बदलाव के वैसा ही रखा जाता है; तब वहाँ इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। अवतरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं -

• **<u>इकहरा उद्धरण चिह्न ('.....')</u>** - किसी वस्तु, व्यक्ति, पुस्तक आदि का नाम लिखने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे -

(i) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(ii) हरिवंश राय 'बच्चन'

(iii) इस कवि की रचना 'राम' लोकप्रिय है।

• **<u>दोहरा उद्धरण चिह्न ("......")</u>** - किसी के कथन को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए दोहरा उद्धरण चिह्न लगाते हैं; जैसे –

(i) राम जी ने कहा "प्राण जाए पर वचन ना जाए।"

(ii) गाँधी जी ने कहा, "हिंसा को छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाओ।"